कथा सरिता

सावधानी से अनुमति

एक घने जंगल में एक इच्छापूर्ति वृक्ष था, उसके नीचे बैठ कर कोई भी इच्छा करने से वह तुरंत पूरी हो जाती थी। यह बात बहुत कम लोग जानते थे। एक बार संयोग से एक थका हुआ व्यापारी उस वृक्ष के नीचे आराम करने के लिए बैठ गया और उसे नींद लग गई। जागते ही उसे बहुत भूख लगी, उसने आस पास देखकर सोचा कि काश कुछ खाने को मिल जाए। तत्काल स्वादिष्ट पकवानों से भरी थाली हवा में तैरती हुई उसके सामने आ गई।

व्यापारी ने भरपेट खाना खाया और भूख शांत होने के बाद सोचने लगा कि काश कुछ पीने को मिल जाए। तत्काल उसके सामने हवा में तैरते हुए अनेक शरबत आ गए। शरबत पीने के बाद वह आराम से बैठ कर सोचने लगा कि आज तक ऐसा हुआ नहीं... जो सोचा वह मिल जाता है। ज़रूर पेड़ पर कोई भूत रहता है जो मुझे खिला पिला कर बाद में मुझे खा लेगा। ऐसा सोचते ही तत्काल उसके सामने एक भूत आया और उसे खा गया। इस प्रसंग से हम यह सीख सकते हैं कि हमारा मस्तिष्क ही इच्छापूर्ति वृक्ष है। हम जिस चीज़ की प्रबल कामना करेंगे वह हमको अवश्य मिलेगी। अधिकांश लोगों को जीवन में बुरी चीज़ें इसलिए मिलती हैं क्योंकि वे बुरी चीज़ों की ही कामना करते हैं। इंसान ज़्यादातर समय सोचता है कि कहीं बारिश में भीगने से मैं बीमार न हो जाऊँ और वह बीमार हो जाता है। इंसान सोचता है कि मेरी किस्मत ही खराब है और उसकी किस्मत सचमुच खराब हो जाती है। इस तरह हम देखेंगे कि हमारा अवचेतन मन इच्छापूर्ति वृक्ष की तरह हमारी इच्छाओं को ईमानदारी से पूर्ण करता है।

इसलिए हमको अपने मस्तिष्क में विचारों को सावधानी से प्रवेश करने की अनुमति देनी चाहिए। यदि गलत विचार अंदर आ जाएंगे तो गलत परिणाम मिलेंगे। विचारों पर काबू रखना ही अपने जीवन पर काबू करने का रहस्य है। हमारे विचारों से ही हमारा जीवन या तो स्वर्ग बनता है या नर्क। विचार जादूगर की तरह होते हैं, जिन्हें बदलकर हम अपना जीवन बदल सकते हैं। इसलिये सदा सकारात्मक सोच रखें। यदि हम अच्छा सोचने लगते हैं तो पूरी कायनात हमें और अच्छा देने में लग जाती है।

सौ बार सोच लें

एक सन्त प्रात: काल भ्रमण हेतु समुद्र के तट पर पहुँचे... समुद्र के तट पर उन्होंने एक पुरुष को देखा जो एक स्त्री की गोद में सर रख कर सोया हुआ था। पास में शराब की खाली बोतल पड़ी हुई थी। सन्त बहुत दु:खी हुए। उन्होंने विचार किया कि ये मनुष्य कितना तामसिक और विलासी है, जो प्रात:काल शराब सेवन करके स्त्री की गोद में सर रख कर प्रेमालाप कर रहा है।

थोड़ी देर बाद समुद्र से बचाओ बचाओ की आवाज़ आई, सन्त ने देखा कि एक मनुष्य समुद्र में डूब रहा है, मगर स्वयं तैरना नहीं आने के कारण सन्त देखते रहने के अलावा कुछ नहीं कर सकते थे। स्त्री की गोद में सर रख कर सोया हुआ व्यक्ति उठा और डूबने वाले को बचाने हेतु पानी में कूद गया। थोड़ी देर में उसने डूबने वाले को बचा लिया और किनारे ले आया। सन्त विचार में पड़ गए कि इस व्यक्ति को बुरा कहें या भला। वो उसके पास गए और बोले भाई तुम कौन हो, और यहाँ क्या कर रहे हो...?

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, मैं एक मछुआरा हूँ, मछली मारने का काम करता हूँ। आज कई दिनों बाद समुद्र से मछली पकड़ कर प्रात: जल्दी यहाँ लौटा हूँ। मेरी माँ मुझे लेने के लिए आई थी और साथ में (घर में कोई दूसरा बर्तन नहीं होने पर) इस मदिरा की बोतल में पानी ले आई। कई दिनों की यात्रा से मैं थका हुआ था, और भोर के सुहावने वातावरण में ये पानी पीकर थकान कम करने के लिए माँ की गोद में सर रख कर ऐसे ही सो गया। सन्त की आँखों में आँसू आ गए कि मैं कैसा पातक मनुष्य हूँ, जो देखा उसके बारे में मैंने गलत विचार किया। जबकि वास्तविकता अलग थी। कोई भी बात जो हम देखते हैं, हमेशा जैसी दिखती है वैसी नहीं होती है, उसका एक दूसरा पहलू भी हो सकता है। इसलिए किसी के प्रति कोई निर्णय लेने से पहले सौ बार सोचें और तब फैसला करें।

सच्ची परीक्षा की घड़ी

समय के पाबंद और घड़ी की सुई के साथ चलने वाले लालबहादुर शास्त्री तब रेलमंत्री थे। वे सरदार नगर में हो रहे एक सम्मेलन में जा रहे थे। मार्ग में एक गाँव पड़ता था। उस गाँव से जब वे गुजर रहे थे तो कुछ ग्रामीणों ने उनकी कार रोक ली। पूछा गया–''क्या बात है?'' तो ग्रामीणों ने कहा –''एक गरीब किसान की औरत की प्रसूति का समय निकट है। कोई वाहन मिल नहीं रहा है और उसे पास के शहर भिजवाना है। यदि आप इस गाड़ी में ले जाने दें तो अच्छा है।'' '' नहीं यह गाड़ी एक सरकारी काम से सरदार नगर जा रही है।''– शास्त्री जी के ही किसी सहयात्री ने तत्काल उत्तर दिया। ग्रामीण ने अनुनय करते हुए कहा–''जी उसे भी सरदार नगर ही ले जाना है।''

बात को अनसुनी करते हुए सहयात्री अधिकारियों ने गाड़ी चलाने को कहा, लेकिन शास्त्री जी तुरंत ही गाड़ी से नीचे उतर पड़े और बोले–''ले आओ उस बहन को। हम अपनी गाड़ी से उसे चिकित्सालय पहुँचा देंगे।'' इस पर उन के साथी बोले–''मंत्री जी! इन लोगों को उस महिला को घर से लाने में समय लग सकता है, संभव है हमारा सम्मेलन समय पर शुरू न हो पाए।'' उत्तर में शास्त्री जी बोले –'' उस बहन को चिकित्सालय ले जाना, उस सम्मेलन से ज़्यादा महत्वपूर्ण है। हम एक जनसेवक कहलाते हुए भी ऐसे नाज़ुक मौके पर अपनी ज़िम्मेदारी से मुकर जाएँ तो इससे बड़ी आत्म-प्रवंचना और क्या होगी?'' फिर शास्त्री जी ने उस स्त्री को चिकित्सालय पहुँचा दिया। विषम परिस्थितियों में महापुरूषों के व्यक्तित्व की सच्ची परीक्षा होती है।

एक चीज़ जो उसने नहीं दी

एक बार एक अजनबी किसी के घर गया। वह अंदर गया और मेहमान कक्ष में बैठ गया। वह खाली हाथ आया था तो उसने सोचा कि कुछ उपहार देना अच्छा रहेगा। तो उसने वहा टंगी एक पेन्टिंग उतारी और जब घर का मालिक आया, उसने पेन्टिंग देते हुए कहा, यह मैं आपके लिए लाया हूँ। घर का मालिक, जिसे पता था कि यह मेरी चीज़ मुझे ही भेंट दे रहा है, सन्न रह गया !!!!!

अब आप ही बताएं कि क्या वह भेंट पाकर, जो कि पहले से ही उसका है, उस आदमी को खुश होना चाहिए ?? मेरे ख्याल से नहीं....लेकिन यही चीज़ हम भगवान के साथ भी करते हैं। हम उन्हें रुपया, पैसा चढ़ाते हैं और हर चीज़ जो उनकी ही बनाई है, उन्हें भेंट करते हैं! लेकिन मन में भाव रखते हैं कि ये चीज़ मैं भगवान को दे रहा हूँ! और सोचते हैं कि ईश्वर खुश हो जाएंगे! मूर्ख हैं हम। हम यह नहीं समझते कि उनको इन सब चीज़ों की ज़रूरत नहीं। अगर आप सच में उन्हें कुछ देना चाहते हैं तो अपनी श्रद्धा दीजिए, उन्हें अपने हर एक श्वास में याद कीजिये और विश्वास मानिए प्रभु ज़रूर खुश होगा।

अजब हैरान हूँ भगवान तुझे कैसे रिझाऊं मैं; कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे तुझ पर चढाऊं मैं। भगवान ने जवाब दिया : संसार की हर वस्तु तुझे मैनें दी है। तेरे पास अपनी चीज़ सिर्फ तेरा अहंकार है, जो मैंने नहीं दिया। उसी को तू मेरे अर्पण कर दे। तेरा जीवन सफल हो जाएगा।

अहमदाबाद-गुज.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में महादेवनगर सबज़ोन संचालिका ब्र.कु. चंद्रिका, प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री मनीषा कोइराला, रुचिर भाई,मैनेजिंग डायरेक्टर,द थार ड्राय पोट, रमेश यादव,प्लांट मैनेजर,एचपी गैस कं, ब्र.कु. रीटा तथा ब्र.कु. प्रितेश।

भिलाई नगर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा खपरी गाँव में 'उत्कृष्ट जीवन शैली का विकास एवं राजयोग शिविर' का उद्घाटन करने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. गीता, उप सरपंच घनश्याम साहू, ब्र.कु. गौरी तथा अन्य।

भोपाल-म.प्र.। रमेश शुक्ला,डायरेक्टर जेनरल,पुलिस हेड क्वार्टर को माउण्ट आबू में होने वाले सेक्योरिटी कॉन्फ्रेन्स के लिए आमंत्रित करने के पश्चात् उनके साथ उपस्थित हैं ब्र.कु. दिलीप तथा श्रीमति मंजू गुप्ता,नेशनल वाइस प्रेसीडेंट,अग्रवाल महासभा।

बिलासपुर-छ.ग.। बंगाली नववर्ष पर आयोजित सामूहिक कार्यक्रम में ब्र.कु. मंजू को उनके सामाजिक आध्यात्मिक क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं हेतु स्मृति चिन्ह, शॉल तथा गुलदस्ता देकर सम्मानित करते हुए नगरीय प्रशासन मंत्री अमर अग्रवाल। साथ हैं बंगाली समाज के अध्यक्ष देवाशीष घोष तथा बंगाली यूथ एसोसिएशन के सदस्य।

कोची-केरल। राजयोग अभ्यास के पश्चात् स्टार इंडिया द्वारा एसिएनेट टी.वी. चैनल्स पर 'एसिएनेट सुपर वाइस' म्युज़िकल रियैलिटी शो के प्रतिभागियों के साथ ब्र.कु. सुमित।

इंदौर-म.प्र.। 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. कमला दीदी, सोनिया मिश्रा,प्रिन्सीपल,डी.वी.एम. स्कूल, सुश्रीता पैक्रव,चेयरमैन,राजगंगपुर म्युनिसिपैलिटी, ओ.पी. अग्रवाल,लायन्स क्लब तथा अन्य।